IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण

[1]सोना ओझा, [2]प्रोफेसर गोपाल प्रसाद, [3]इंदु पांडे

[1]रिसर्च स्कॉलरए दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालयए गोरखपुर

[2]प्रोफेसरए दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालयए गोरखपुर

[3]रिसर्च स्कॉलरए बी० आर० डी० पी०जी० कॉलेजए देवरिया

सारांश

हाल के वर्षों में महिलाओं के जीवन के रूप में महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है। आधुनिक महिला अब घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है। महिलाएं हर तरह से अपनी क्षमता और उपयोगिता को महसूस कर रही हैं। साथ ही वे घर और कार्य स्थल दोनों जगहों पर लैंगिक समानता और न्याय की मांग कर रही हैं। उन्होंने तकरीबन हर क्षेत्र में बाधाओं को दूर किया है। चाहे तकनीक का क्षेत्र हो या अंतरिक्ष विज्ञानए खेल या सेना सभी जगहों पर महिलाएं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। देश के ग्रामीण और गहरी दोनों क्षेत्रों में हर पांचवी महिला उद्यमी है। इस बदलाव को लाने में हाल के वर्षों में सरकार ने अहम भूमिका निभाई है। गर्भ में पल रही कन्या शिशु से लेकर कार्य स्थल पर कामकाजी महिलाओं तक की सुरक्षा की जरूरत को महसूस करते हुए कई कदम उठाए गए हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य सरकारा द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु किए गए प्रयासों से अवगत करना है।

संकेत शब्द: महिला सशक्तिकरण, महिला सुरक्षा, स्वास्थ्य, महिला उद्यमिता

संदर्भ

एक महिला अपने आप में संपूर्ण है। महिला के अंदर सृजन पोषण और परिवर्तन की ताकत है। भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति की अवधारणा अपने आप अनंत में काल में मौजूद रही है। प्राचीन काल से देवी मां की विभिन्न स्वरूपों में पूजा होती आई है. पूर्वी भारत में दुर्गा और कालीए केरल में महिषासुर मर्दिनी और भगवती आदि। उन्हें हमेशा शक्ति का प्रतीक माना गया है। माना जाता है कि वे उन कार्यों को पूरा करने में सक्षम हैं जो पुरुष नहीं कर सकते। हालांकि यह तस्वीर का एक पहलू है। दूसरी ओर महिलाओं की स्थिति भारतीय समाज में अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। परिवार के फैसले में भूमिका की बात तो दूर वे अपनी जिंदगी जीने के लिए भी आवाज नहीं उठा पाती हैं। महिलाएं अपनी जिंदगी में पुरुषों के अधीन रही हैं। समाज में उनकी आकांक्षाओं को इतना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था कि उसे प्रोत्साहित किया जाए। मांए पत्नी और बेटी के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के पालन में उन्हें तमाम कठिनाइयों में दो.चार होना पड़ता है। भारतीय सरकारों ने समाज में महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण हेतु अनेक प्रयास किए हैं। मातृत्व के सफर के जरिये महिलाओं का सशक्तीकरण वर्तमान सरकार का मुख्य उद्देश्य रहा है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना जैसे कार्यक्रम गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान महिलाओं को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। एक और अहम कदम के तहत मातृत्व लाभ कानून में बदलाव कर कामकाजी महिलाओं के लिए 26 हफ्ते के वैतनिक मातृत्व अवकाश का प्रावधान किया गया है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं और सुकन्या समृद्धि योजना जैसे कार्यक्रम बच्चियों को भ्रूण हत्या का शिकार बनने से बचाने से लेकर लड़कियों की शिक्षा और वित्तीय सुरक्षा तक सुनिश्चित करते हैं। एक स्वस्थ्य महिला ही सशक्तीकरण से जुड़ी हो सकती है। अतः आयुष्मान भारत कार्यक्रमए राष्ट्रीय पोषण मिशनए उज्ज्वला योजना आदि भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जरूरतों का ख्याल रखती हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों से महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद मिली है। प्रधान मंत्री मुद्रा योजनाए स्टैंड.अप इंडियाए स्टार्ट.अप इंडिया और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका के तहत स्वयंसहायता समूह योजना जैसी योजनाओं ने महिलाओं की वित्तीय रूप से सुरक्षित और स्वतंत्र बनाने में सहायता की है। प्रधानमंत्री जन धन योजना ने भी महिलाओं के वित्तीय समावेशन में अहम भूमिका निभाई है।

भारत में कामकाजी जगहों पर हर चौथी कर्मी महिला है। काम जितना तकनीकी और जटिल होगा॰ हमें उसमें उतनी ही ज्यादा महिलाओं की संख्या देखने को मिल सकती है। एक तिहाई सर्टिफाइड इंजीनियर महिलाएं हैं। प्राथमिक स्तर पर तीन चौथाई से भी ज्यादा स्वास्थ्यकर्मी भी महिलाएं ही हैं। एक अनुमान के मुताबिकए तकरीबन एक तिहाई सभी चिकित्सा क्षेत्र में शोधकर्ताए बैंकिंग कर्मचारीए सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के कर्मी और चार्टर्ड एकाउंटेंट महिलाएं हैं। उद्यमिता की भावना से परिपूर्ण इस देश में करीब 20 फीसदी महिलायें उद्यमी हैं। विभिन्न क्षेत्रों में हिस्सेदारी बढ़ने के कारण सार्वजनिक और निजी दोनों जगहों पर महिलाओं की हैसियत लगातार बढ़ रही है।

भारतीय राजनीति में महिलायें

भारतीय राजनीति में महिलाओं की संख्या में साल दर साल वृद्धि हो रही है। महिलाओं का नेतृत्व कौशल सराहनीय है। पंचायतों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या तकरीबन 46 फीसदी है। ग्रामीण स्तर पर 13 लाख से भी ज्यादा महिलाओं के सत्ता में होने के कारण देश के परिदृश्य में जमीनी स्तर पर बदलाव आ रहा है। उदाहरण के तौर पर 1957 के चुनाव में सिर्फ 45 महिलाओं ने आम चुनाव लड़ा थाए जबकि 2014 के आम चुनाव में 668 महिलाएं चुनावी मैदान में थीं। 2019 के आम चुनाव में 723 महिलायें चुनाव में उतरी थींए जिसमे से 78 ने चुनाव जीता था। वर्तमान में संसद में कुयल महिला सदस्यों की संख्या 103 है। हाल ही में संसद से पास हुआ महिला आरक्षण विधेयक महिलाओं की राजनीति में सहभागिता को राष्ट्रीय स्तर पर सुनिश्चित करेगा।

महिलाओं की सुरक्षा

महिला सशक्तीकरण के एजेंडे में सभी जगहों पर महिलाओं की सुरक्षा का मामला बेहद महत्वपूर्ण है। कार्य स्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के खिलाफ कानूनए ऑनलाइन शिकायत प्रणालीए 181 महिला हेल्पलाइनए पैनिक बटन आदि चीजे सशक्तीकरण यात्रा में महिलाओं की सुरक्षा करने के लिए तैयार हैं। तीन तलाक मुस्लिम महिलाओं के विकास में बड़ी बाधा रही है। इस प्रथा को खत्म करने के लिए तीन तलाक बिल को पहले ही लोकसभा से मंजूरी मिल चुकी है। अगर हम कार्यबल में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता चाहते हैंए तो हमें कामकाजी ठिकानों को महिला कर्मचारियों के अनुकूल बनाने की जरूरत है। इसके लिए कामकाजों जगहों पर महिलाओं के उत्पीड़न ;रोकथामए निषेध और निदानद्ध में संबंधित कानून ;2013द्ध को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता है। यह महिलाओं को कामकाजी जगहों पर सुरक्षित माहौल मुहैया कराता है और इसके दायरे में सभी उम्र की महिलाएंए पूर्णकालिक और अंशकालिकए सार्वजनिक और निजी क्षेत्रए संगठित या असंगठित क्षेत्र से जुड़ी औरतें, छात्राएं और ऑफिस जाने वाली महिलायें भी सम्मिलित हैं।

महिला स्वास्थ्य

स्वास्थ्य मोर्चे पर महिलाओं ने बेहतरी हासिल की है। महिलाओं की औसत आयु जहां 1950.51 में 31ण्7 साल थीए वहीं डब्ल्यू॰ एच॰ ओ॰ की रिपोर्ट के अनुसार 2020 में यह बढ़कर 71 साल हो गई। अब ज्यादा से ज्यादा महिलाएं घर की बजाय अस्पताल में बच्चों को जन्म दे रही है। 2014.15 में इस संबंध में आंकड़ा बढ़कर रिकॉर्ड स्तर यानि 70 फीसदी पर पहुंच गया। यह बच्चा और मा दोनों के स्वास्थ्य के लिहाज से बेहतर है। 2001.03 और 2011.13 के दशक के दौरान मातृत्व मृत्यदर घटकर आधी हो गई। महिलाओं के विनीय समावेशन में भी जबरदस्त बढ़ोत्तरी हुई है। विशेष तौर पर पिछले कुछ साल में ऐसा देखने को मिल रहा है। 2005.06 में बैंक या बचत खाता रखने वाली सिर्फ 15 फीसदी महिलाएं थीए जबकि 2015.16 में यह आकड़ा बढ़कर 53 फीसदी हो गई।

दुर्भाग्य से इन सकारात्मक आंकड़ों के पश्चात भी हमारे देश में महिलाओं को अब भी अपने जीवन और आजादी को लेकर अनेक कठिनाइयों से दो चार होना पड़ता है। अक्सर ही हम अखबारों या खबरों में महिलाओं अथवा बछियों के साथ हो रही वीभत्स घटनाओं को देखते हैं। कई बार छोटी बच्चियों को अपने भाई.बहनों को देखभाल अथवा उनकी शादी हो जाने के कारण स्कूल छोड़ना पड़ता है। महिलाओं का अब भी अपने घर और खेतों में काम में काफी योगदान होता है, किन्तु इसका उनक=ही कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता। कामकाज में तमाम योगदान के बावजूद उन्हें घरेलू या कामकाजी फैसलों में उन्हें बराबरी का अधिकार नहीं दिया जाता है। अब भी ये सब उनके जीवन की कड़वी सच्चाइयां हैं। अगर हम भारतीय महिलाओं का मवमुच में सशक्तीकरण चाहते हैं तो भेदभाव और हिंसा के इस सिलसिले को महसूस करते हुए कदम उठाने की जरूरत है।

देश की महिलाओं को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैए वे हमारे पूरे समाज की समस्याएं हैं। सरकार तथा समाज दोनों को लैंगिक समानता के मामले में आदर्श स्थिति सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव कदम उठाने को प्रतिबद्ध होना चाहिए । महिलाओं के सशक्तीकरण के बिना देश में किसी भी तरह की प्रगति नहीं हो मकती। सरकार ने महिलाओं को बराबरी का मौका मुहैया कराने और उनके विकास के लिए सहयोगात्मक और सुरक्षित माहौल को खातिर कई कदम उठाए हैं। शिक्षा और संगठित रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं को भागीदारी को प्रोत्साहित करनेए उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की बेहतरीए सार्वजनिक और निजी भागीदारी को बढ़ावा देने उन्हें सुरक्षित सार्वजनिक और निजी स्थान मुहैया कराने और उनके साथ परिवार के अंदर और बाहर समान व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए कई कानून बनाए गए हैं और योजनाएं भी लागू की गई हैं।

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता विकास और आय अर्जक गतिविधियां व्यावहारिक साधन मुहैया कराती हैं। सशक्तीकरण की अवधारणा ऐसी प्रक्रिया को परिभाषित करती है जिसमें महिलाओं को चुनने की आजादी मिलती है। सशक्तीकरण का दूसरा अर्थ अपने लक्ष्य तय करना और उनके लिए कार्य करनाए लैंगिक शक्ति संरचनाओं के प्रति जागरूकता तथा आत्मसम्मान और आत्मविश्वास है । सशक्तीकरण सभी स्तरों पर संभव है.व्यक्तिगतए पारिवारिकए सामुदायिक एवं सामाजिकए और अनेक प्रकार प्रोत्साहनपरक उपायों ;यानि नई गतिविधियों में संलग्न करनाए ताकि क्षमता निर्माण किया जा सकेद्ध और अवरोधों को दूर करके ;अर्थात संसाधनों और दक्षताओं की कमीद्ध महिलाओं को सशक्त किया जा सकता है।

महिलाओं की उद्यमशीलता और आर्थिक भागीदारी के महत्व को स्वीकार करते हुए और देश के विकास और समृद्धि को संभव बनाने के लिए भारत सरकार ने सभी नीतिगत कार्यक्रमों के जरिए महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने हेतु अनेक प्रयास किए हैं। सरकार ऋणए नेटवर्कए बाजार और प्रशिक्षण तक पहुंच प्रदान करके महिलाओं को अर्थव्यवस्था की अगली पक्ति में लाने का प्रयास कर रही है। सूक्ष्मए लघु एवं मध्यम उद्योग विकास संगठन ;एमएसएमई.डीओद्ध विभिन्न राज्य लघु उद्योग विकास निगम ;एमआईडीसीद्धए बैंक और उद्यमिता विकाम कार्यक्रम ;इंडीपीद्ध सहित विभित्र गैर सरकारी संगठन अनेक कार्यक्रम चला रहे है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम ;ईडीपीद्ध भी इन्हीं कार्यक्रमों में से एक है। इसका उद्देश्य उन संभावनाशील महिला उद्यमियों की मदद करना है जिन्हें पर्याप्त शिक्षा या दक्षता हासिल नहीं है। एमएसएमई.डीओ ने कई जैसे टीवी मरम्मतए प्रिंटेड सर्किट बोर्डसए चमड़े के उत्पादए स्क्रीन प्रिंटिंग इत्यादि में प्रक्रिया उत्पाद आधारित ईडीपी को शुरुआत की है। महिला उद्यमियों की उपलब्धियों को मान्यता देने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए श्उत्कृट महिला उद्यमश नामक पुरस्कार की शुरुआत भी की गई है। साथ ही नीति आयोग ने महिला उद्यमिता मंच की शुरुआत कीए जिसका उद्देश्य एक ऐसी व्यवस्था तैयार करना है ताकि वे उद्यमशीलता की अपनी संभावनाओं को महसुस करें तथा अपने उद्यमों के स्थायित्व और दीर्घकालिक रणनीतियों का आकलन कर सकें।

महिलाओं के संपूर्ण सशक्तीकरण में आर्थिक सशक्तीकरण सबसे अहम है और वित्तीय समावेशन इसका अहम हिस्सा है। सुकन्या समृद्धि योजना और प्रधानमंत्री जन धन योजना के जरिये सरकार ने बैंकिंग सुविधाओं से वचित लोगों को बैंकिंग सेवाओं में जोड़ा। जन धन योजना के तहत 16ण्42 करोड़ महिलाओं के खाते खोले गए हैं। 2014 में कुल बचत खातों में महिलाओं को हिस्सेदारी 28 फीसदी थीए जो 2017 में बढ़कर 40 फीसदी हो गई ;40 बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के आकड़ों के मुताबिकद्ध है। महिलाओं के वित्तीय समावेशन के मामले में इसे अच्छी और तेज बढ़ोतरी कहा जा सकता है। दशकों से वितीय समावेशन का यह लक्ष्य काफी अहम रहा है। प्रधान मंत्री मुद्रा योजना के तहत भारत सरकार ने किसी गारंटर या संपति या इससे जुड़े कागजात के बिना छोटे उद्यमियों को कर्ज मुहैया कराया है। ऐसे 75 फीसदी कर्ज महिलाओं को दिए गए हैं और इस योजना में 9ण्81 फीसदी महिला उद्यमियों को फायदा हुआ है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ;एनआरएलएमद्ध के तहत 47 लाख से भी ज्यादा स्वयंसहायता समूहों ;एसएबजीद्ध को बढ़ावा दिया गया है और इसके तहत 2ए000 करोड़ से भी ज्यादा के फंड वितरित किए गए हैं। पिछले वित्त वर्ष में महिला स्वयंसहायता समूहों को मंजूर किए गए कर्ज में 37 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली।

महिलाओं में कौशल विकास की महत्ता

कौशल विकास हमारे महिला कार्यबल से जुड़ी संभावना को बढ़ाने का एक और अहम पहलू है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं में कौशल विकास का प्रशिक्षण लिया है। अब तक इस प्रशिक्षण से जुड़े आधे प्रमाण पत्र महिलाओं को दिए गए हैं। कार्यबल में महिलाओं की मौजूदगी बनाए रखने के लिए मातृत्व लाभ कानून में संशोधन किया गया है। इसके तहत कामकाजी महिलाओं के लिए मातृत्व अवकाश से जुड़ी जरूरी छुट्टियों की अवधि को बढ़ाकर 26 हफ्ते कर दिया गया है। इससे कामकाजी महिलाओं का सशक्तीकरण होता हैए क्योंकि उन्होंने बच्चे के जन्म के कारण वेतन

या रोजगार खोने को लेकर डरने की जरूरत नहीं होती। इसके अलावाए उनके पास प्रमथ काल से उबरने और अपने बच्चे को स्तनपान कराने के लिए पर्याप्त वक्त होगा।

असंगठित क्षेत्र को भी इस सुरक्षा के दायरे में लाने की खातिर गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत नकद राशि भी मुहैया कराई जाती है। मेहनताने के नुकसान को आंशिक भरपाई के तौर पर इन माताओं को प्रोत्साहन के रूप में 6ए000 रुपये दिए जाते हैए जिससे वे प्रसव के थोड़ा पहले और बाद में पर्याप्त आराम कर सकती है और उनके पास अपने बच्चे को ढंग में स्तनपान कराने का भी मौका होगा। इस योजना के तहत पहले ही 18 लाख से भी ज्यादा लाभार्थी जुड़ चुकी हैं। महिलाओं का बरिष्ठ और बड़े पदों पर पहुंचाने में काबिल महिलाओं की योग्यता को पहचानने की दिशा में सकारात्मक कदम है। साथ हीए ऐसे में संस्थानों को भी ज्यादा से ज्यादा महिलाओं के अनुकूल बनाया जा रहा है। सार्वजनिक और निजी कंपनियों में बड़े पदों पर और कंपनियों के बोर्ड में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत में कंपनियों में फिलहाल 5 लाख भी ज्यादा महिला निदेशक हैए जो देश में इस मामले में अब तक का रिकॉर्ड है।

निष्कर्षरू.

महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में हालिया घटनाक्रम काफी उत्साहजनक है। भारतीय वायु सेना में हाल में पहली महिला लड़ाकू पायलट की नियुक्ति की गई है। महिलाएं अब सेना में युद्ध से जुड़ी भूमिका में भी जा सकती हैं। ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेल और क्रिकेट समेत कई अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में भारतीय महिलाओं का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला है। यहां तक कि भारत में मंगलयान मिशन की सफल शुरुआत और 104 नैनो उपग्रह को एक रॉकेट के जरिये कक्षा में स्थापित करने वाली टीम में महिला वैज्ञानिक भी शामिल थीं। ये महिलाएं देश के लिए मिसाल की तरह हैं और ष्बेटी बचाओए बेटी पढ़ाओष नारे को प्रतिबिंबित करती है। भारत स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता हासिल करने में सफल रहा है। यहां तक कि चिकित्साए कानूनए सूचना.प्रौद्योगिकीए प्रबंधन आदि तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व तेजी से बढ़ रहा है। 1951 में महिलाओं की साक्षरता दर सिर्फ 9 फीसदी थीए जो 2011 में बढ़कर 65 फीसदी तक पहुंच गई। देश की कुल आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी तकरीबन 50 फीसदी है। ऐसे में महिलाओं के सशक्तीकरण के बिना विकास की यात्रा संभव नहीं हो सकती। देश को नई राह पर ले जाने के लिए बहुस्तरीय संगठित रवैये के साथ महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका में बढ़ोत्तरी हुई है। मसलन दफ्तरों के कामकाजए अंतरराष्ट्रीय खेल जगतए नौकरशाहीए राजनीतिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों और अन्य जगहों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। इस तरह का बदलाव सकारात्मक है। बदलाव की यह रफ्तार पहले से कहीं ज्यादा तेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कबीर एन० (2001) रिफलेक्शनस ऑन द मेजर्मेन्ट ऑफ विमेन्स एम्पावर्मेंट, डिस्कसीन्ग विमेन्स एम्पावर्मेंट- थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, सिडा स्टडीस, ३ स्टॉकहोम
2. Sharma A., Rai B., and Chakrabarty D. (2017) Potential of self help groups: A case study from Uttar Dinajpur district of West Bengal, DOI: 10.31901/24566756.2012/30.01.09
3. Ministry of Health and Family Welfare website https://main.mohfw.gov.in/
4. Ministry of Women and Child Development website https://wcd.nic.in/
5. A remarkable rise in life expectancy in India but efforts needed to improve country's healthcare: Report https://www.wionews.com/india-news/a-remarkable-rise-in-life-expectancy-in-india-but-efforts-needed-to-improve-countrys-healthcare-report-**468391**
6. Know India website https://knowindia.india.gov.in/profile/literacy.php